बेहद का वैराग्य - 02

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **यह स्मृति सदैव रहे कि मैं निराकार से साकार में आकर यह कार्य कर रही हूँ। बीच-बीच में हर कर्म करते हुए इस स्थिति का अभ्यास करते रहो।**

➳ _ ➳ **तो निराकार हो साकार में आने से निरहंकारी और निर्विकारी ज़रूर बन जायेंगे।** यह अभ्यास अल्पकाल के लिए करते भी हो, लेकिन अब इसी को सदाकाल में ट्रॉन्सफर करो।

➳ _ ➳ **यूं वैरागी भी बने हो, वैराग्य वृत्ति है, लेकिन सदाकाल के लिए और बेहद के वैरागी बनो। नहीं तो कोई हद की वस्तु वैराग्य वृत्ति से हटाने के लिए निमित्त बन जाती है। (15.09.1971)**

➢ कौनसी वस्तु सदाकाल के बेहद के वैराग्य को खत्म कर देती है ?

➳ _ ➳ सारे साधन

➳ _ ➳ सारी चिजे (वस्तुये)

➳ _ ➳ यह उनके पास है, पर मेरे पास नहीं है यह ख्याल

➳ _ ➳ लोग क्या कहेंगे ?

→ की अभी तक यही पुराना मोबाईल यूज़ कर रहे है

■ अभी तो जमाना कितना आगे बढ़ गया है

▶ और ये तो यही रुके हुए है

➳ _ ➳ कपड़े

➳ _ ➳ जूते

→ हर जगह जाने के लिये अलग अलग चाहिये

➳ _ ➳ चश्मा

➳ _ ➳ स्वेटर

➳ _ ➳ JACKET

➳ _ ➳ गाड़ी

➳ _ ➳ WATCH

➳ _ ➳ फर्नीचर

➳ _ ➳ PURSE

➳ _ ➳ PERFUME

➳ _ ➳ BED

→ यह वस्तुये हद की बेहद की वैराग्य वृति को लाने के लिये रोकती है

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **जो फ्युचर में महाविनाश होने वाला है और नई दुनिया आने वाली है, वह भी आपके फीचर्स से दिखाई दे।** देखेंगे तो फिर वैराग्य आटोमेटिकली आ जावेगा।

➳ _ ➳ **एक तरफ वैराग्य दूसरे तरफ अपना भविष्य बनाने का उमंग आवेगा। जैसे कहते हो -एक आंख में मुक्ति, एक में जीवनमुक्ति। तो विनाश मुक्ति का गेट और स्थापना-जीवनमुक्ति का गेट है; तो दोनों आंखों से यह दिखाई दे।**

➳ _ ➳ यह पुरानी दुनिया जाने वाली है-आपके नैन और मस्तिष्क यह बोलें। मस्तक भी बहुत बोलता है। कोई का भाग्य मस्तक दिखाता है, समझते हैं यह बड़ा चमत्कारी है। **तो ऐसी जब सर्विस करें तब जयजयकार हो। तो अब विश्व के आगे एक सैम्पल बनना है।**

(19.07.1972)

➳ _ ➳ **एक तरफ मधुरता, दूसरे तरफ इतना ही फिर बेहद की वैराग्यवृति।** वैराग्यवृति से सिर्फ गम्भीरमूर्त रहेंगे? नहीं, **वास्तविक गम्भीरता रमणीकता में समाई हुई है।** वह तो अज्ञानी लोगों का गम्भीर रूप होगा तो बिल्कुल ही गम्भीर, रमणीकता का नाम-निशान नहीं होगा। **लेकिन यथार्थ गम्भीरता का गुण रमणीकता के गुण सम्पन्न है।**

➳ _ ➳ **जैसे लोगों को भी समझाते हो कि हम आत्मा शान्तस्वरूप हैं। लेकिन सिर्फ शान्तस्वरूप नहीं है लेकिन उस शान्तस्वरूप में आनन्द, प्रेम, ज्ञान सभी समाया हुआ है। तो ऐसे बेहद के वैराग्यमूर्त वाले और साथ-साथ मधुरता भी, यही विशेषता मधुबन निवासियों की है।**

➳ _ ➳ तो जो बेहद के वैराग्यवृति में रहने वाले हैं वह कब घबराते हैं क्या? डगमग हो सकते हैं? हिल सकते हैं? **कितना भी जोर से हिलायें लेकिन बेहद के वैरागवृति वाले 'नष्टोमोहा स्मृतिस्वरुप' होते हैं।**

➳ _ ➳ तो नष्टोमोहा स्मृतिस्वरुप हो? **कि थोड़ा बहुत देख कर कुछ अंश मात्र भी स्नेह कहो वा मोह कहा-लेकिन स्नेह का स्वरुप क्या होता है, इसको तो जानते हो ना?**

➳ _ ➳ **जिसके प्रति स्नेह होता है तो उसके प्रति सहयोगी बन जाना होता है। बाकी कोई रीति रस्म से स्नेह का रूप प्रकट करना-इसको स्नेह कहेंगे वा मोह कहेंगे?**

(19.09.1972)

➢ कौन से 2 प्रकार के वैराग्य होते है ?

➳_ ➳ **तीव्र वैराग्य**

→ **एक धक से छोड़ देते है**

■ कुछ भी DELAY नहीं करेंगे

➳_ ➳ **मंद वैराग्य**

→ **ठीक है, चलता है**

■ आज नहीं तो कल छोड़ ही देंगे

- ▶ छोड़ना ही तो है, बाद में छोड़ देंगे, अभी तो टाइम है

➢➢ इरछा

➳_ ➳ **इरछाये इन्सान को भटकाती है**

→ **एक के बाद एक इरछा MULTIPLIED होती जाती है**

- **इरछाये बढती ही जाती है**
  - ▶ यह मिल गया, अब वो चाहिये
  - ▶ इरछाये कभी कम होने का नाम ही नहीं लेती है

➳_ ➳ बाबा ने हमे सम्पूर्णता की परिभाषा ही दी हुई है

→ **इरछा मातरम् अविज्ञा**

→ इरछाओ से अविज्ञा हो जानी चाहिये

→ हमे अब एक ही इरछा होनी चाहिये

- बाबा को प्रत्यक्ष करने की
- बाप समान बनने की
  - ▶ यह उमंग, यह फुरना होनी चाहिये

➳_ ➳ वो सारी इरछाये जो हमे **वैराग्य वृति से** निचे गिराती है

➳_ ➳ वो सारी इरछाये जो **हमारी स्थिति को** निचे गिराती है

➳_ ➳ वो सारी इरछाये जो हमे **मार्ग से भटकाती है**

→ **इन सभी इरछाओ से हमे मुक्त होना है**

- इसके लिये यदि थोडा बहुत दमन भी करना पड़े तो कर लो
  - ▶ कितना भी उसे संतुष्ट करने की कोशिश करो
  - ▶ वो संतुष्ट तो होती नहीं है

➳_ ➳ माया से अगर युद्ध करना है

→ तो उसे समझ के उसके साथ युद्ध करना है

- **माया की कमजोरी को देखो**
  - ▶ **उसको पकड़ो**

➳_ ➳ सीधा आक्रमण नहीं करना है

→ इरछा आ गई की यह चाहिये

- अभी उसको कितना भी समजाओ की नहीं नहीं
  - ▶ पर वो मानेगी नहीं, उसको तो चाहिये ही
  - ▶ जब तक उसको नहीं मिल जायेगा शांत नहीं होगी
  - ▶ तो भिन्न भिन्न अलग अलग रीती से सोचो

→ **जो भी इरछाये होती है, वह कुछ पल की ही होती है**

- **हर इरछा को साक्षी होकर देखना है**
- **इरछाये तो आती है और चली जाती है**

- जो भी मन में इरछा आती है आने दो
- और उसे देखते रहो
- तो वो अपनेआप विलीन हो जायेगी

→ इसीलिए बाबा ने सेवा दी हुई है

- सेवा में स्वयं को बिजी कर दो
  - तो इरछाये स्वतः समाप्त हो जायेगी